RNI Regn.No.- 54447/78 स्थापित: 1978 Postal Reg. No. UA/NTL- 08/ 2024-26

पिघलता हिमालय

वर्ष 39 अंक 51 हल्द्वानी सम्वत् 2081 सोमवार 27 मई 2024 एक प्रति 5 रु., वार्षिक-200 रु. आजीवन 2000 रु.

संस्थापक- स्व.आनन्द बल्लभ उप्रेती
स्व.दुर्गा सिंह मर्तोलिया,
स्व.श्रीमती कमला उप्रेती

editorpighaltahimalay@gmail.com
Website-
www.pighaltahimalay.com

सम्पादक : श्रीमती गीता उप्रेती
संरक्षक : फली सिंह दत्ताल
मंगल सिंह मर्तोलिया

उत्तराखण्ड उच्च न्यायालय के सामने रिव्यू पैटिशन के रूप में न्यायालय को नैनीताल से अन्यत्र शिफ्ट करने का निर्णय वापस लेने का निवेदन

कार्यालय प्रतिनिधि

दिनांक 8 मग्र 2024 को माननीय उच्च न्यायालय ने एक जनहित याचिका की सुनवाग्र के क्रम में मौखिक रूप से हाईकोर्ट के लिये गौलापार, हल्द्वानी को अनुपयुक्त बतलाते हुए इसे आई.डी.पी.एल., ऋषिकेश ले जाने के पक्ष में विचार व्यक्त किया। बाद में अपने लिखित आदेश में न्यायालय ने हाईकोर्ट के लिये नैनीताल को भी अनुपयुक्त घोषित कर दिया और नये स्थान के लिये एक तरह के 'जनमत संग्रह' करने का आदेश दिया। इस बारे में प्रदेश सरकार से भी आख्या माँगी गई है। माननीय न्यायालय के इस आदेश से हम लोग स्तब्ध हैं और इस निर्णय को वापस लेने का अनुरोध करते हैं। 21 वर्ष पूर्व 2003 में भी हम लोग एक आदेश से ऐसे ही आहत हुए थे, जब हाईकोर्ट ने मुजफ्फरनगर नगर के जघन्य काण्ड के एक आरोपी अनन्त कुमार सिंह को दोषमुक्त करार दिया था। उस वक्त समस्त राज्य आन्दोलनकारियों ने मिल कर इस आदेश का जबर्दस्त विरोध किया था और अदालत ने भी अपना निर्णय वापस ले लिया था। हमें उम्मीद है कि इस बार भी माननीय उच्च न्यायालय उत्तराखण्ड की जनता की भावनाओं का सम्मान करेगी।

उत्तराखण्ड राज्य का जन्म एक लम्बे जन संघर्ष के बाद हुआ था, जिसमें 40 से अधिक लोगों ने अपने प्राणों की आहुति दी थी और सत्ता का मुजफ्फरनगर काण्ड जैसा आक्रमण झेला था। इसके बावजूद जनता अपना अधिकार लेने में सफल हुई। उस आन्दोलन के दौरान ही जनता ने यह तय किया था कि उत्तराखण्ड राज्य की राजधानी गैरसैंण होगी। उत्तर प्रदेश के तत्कालीन मुख्यमंत्री मुलायम सिंह यादव द्वारा गठित रमाशंकर कौशिक समिति ने भी उत्तराखण्ड भर में विस्तृत सर्वेक्षण कर जनता की इस माँग पर मुहर लगायी थी। लेकिन राज्य बनने के बाद न तो गैरसैंण राजधानी बन सकी और न ही वहाँ उच्च न्यायालय स्थापित हो सका। देहरादून तो अभी भी अस्थायी राजधानी है और प्रदेश की सत्ता में आयी हर सरकार राजधानी गैरसैंण ले जाने का आश्वासन देती है। हालाँकि एक विधानसभा भवन बनने के अतिरिक्त राजधानी बनने की दिशा में वहाँ कोई प्रगति अब तक नहीं हो पायी है। किन्तु हाईकोर्ट को यदि नैनीताल से हटा कर कहीं अन्यत्र ले जाना है तो गैरसैंण ले जाना चाहिये। यह उत्तराखण्ड की मूल भावना के अनुरूप होगा।

माननीय उच्च न्यायालय का यह निर्णय बगैर किसी गहन विचार-विमर्श के, सिर्फ अपनी मनमर्जी के आधार पर लिया गया लगता है। न्यायालय ने अपने इस फैसले में बहुत सी ऐसी बातें कही हैं, जो या तो उसके अधिकार क्षेत्र का अतिक्रमण करती हैं या फिर परस्पर विरोधाभासी हैं। प्रदेश सरकार के स्तर पर उच्च न्यायालय के विस्तार के लिये एक प्रक्रिया चल ही रही है। सरकार ने अपनी कैबिनेट बैठक में इस बारे में निर्णय लिया है और उस निर्णय को कार्यान्वित करने की दिशा में प्रयत्नशील है। ऐसे में माननीय न्यायालय का इस बारे में निर्णय देना विधायिका के अधिकार क्षेत्र का अतिक्रमण ही माना जायेगा। हाईकोर्ट ने सर्वोच्च न्यायालय का उल्लेख कर हल्द्वानी में प्रस्तावित हाईकोर्ट की भूमि के अधिकांश भूभाग पर वृक्ष होने पर चिन्ता व्यक्त की है, विशेषकर हाल के दिनों में प्रदेश के जंगलों में व्यापक रूप से लगी आग के सन्दर्भ में। यह चिन्ता सराहनीय है, मगर यह ध्यान देने की बात है कि विकास कार्यों के लिये पेड़ों का कटान होता ही है और उसके लिये प्रतिपूरक वृक्षारोपण की व्यवस्था है। जब वृक्षों का अनावश्यक कटान हो तो सबसे पहले जनता ही आपत्ति उठाती है। मगर जहाँ जनता विरोध करती है, वहाँ विकास के नाम पर जबर्दस्ती भारी संख्या में दुर्लभ प्रजातियों के ऐसे पेड़ काट दिये जाते हैं, जिनका विकल्प सम्भव ही नहीं है। चार धाम के लिये बन रही ऑल वैदर रोड इसका एक ज्वलन्त उदाहरण है, जिसका वहाँ के लोगों ने लगातार विरोध किया, मगर इसके बन जाने के बाद लगातार प्रकृति से छेड़छाड़ का खामियाजा भुगत रहे हैं। इसकी तुलना में तराई भाबर के जंगल उतने महत्वपूर्ण नहीं हैं। यदि शासन-प्रशासन में इच्छा शक्ति हो तो प्रतिपूरक वृक्षारोपण से कहह्न भी वैसा जंगल तैयार किया जा सकता है। यह बात समझ से परे है कि यदि माननीय न्यायालय ने हाईकोर्ट स्थानान्तरित करने का मन बना ही लिया है तो फिर एक पोर्टल बना कर अधिवक्ताओं और आम जनता की राय माँगने का क्या अर्थ रह जाता है? जनता की राय यदि हाईकोर्ट के नैनीताल में ही बने रहने के पक्ष में आता है तो क्या अदालत का फैसला स्वत: ही निरस्त हो जायेगा? वैसे भी उत्तराखण्ड की जनता तीस वर्ष पहले, वर्ष 1994 में ही कौशिक समिति के सामने अपनी राय रख चुकी है, जिसका सम्मान उच्च न्यायालय को करना चाहिये और हाग्रकोर्ट को गैरसैंण ले जाने का फैसला करना चाहिये।

माननीय न्यायालय ने कोर्ट को हटाने के लिये नैनीताल नगर में सुविधाओं के अभाव का भी तर्क दिया है। विशेष रूप से उसने पर्यटन की समस्या, ट्रैफिक, कनेक्टिविटी और स्वास्थ्य सुविधाओं का जिक्र किया है। सच्चाई यह है कि पहाड़ के बाकी हिस्सों की तुलना में नैनीताल में बहुत अधिक सुविधायें हैं और अगर नहीं हैं तो न्यायालय का नैतिक दायित्व है कि इन सुविधाओं के निर्माण के लिये अपनी शक्तियों का उपयोग करे। न्यायालय यदि ऐसा करेगा तो वादकारियों का ही नहीं, नैनीताल और उस समस्त पर्वतीय क्षेत्र का भला होगा, जिसके लिये उत्तराखण्ड राज्य की स्थापना की गई थी। वादकारी अन्तत: सामान्य नागरिक ही होता है। सामान्य नागरिक के लिये सुविधायें बढ़ने पर वादकारी स्वत: ही लाभान्वित होगा। पर्वतीय क्षेत्रें में सुविधायें पैदा करने की जरूरत है न कि सुविधाओं के नाम पर पहाड़ों

शेष पृष्ठ 2 पर

जागेश्वर धाम में भक्तों का रेला, शटल सेवा शुरू

अल्मोड़ा। झुलसाने वाले गर्मी में पर्यटकों का पहाड़ दौरा भरमार हो चुका है। ऐसे में जागेश्वर धाम में भी भक्तों का रेला है। इससे यातायात के साथ ही अन्य व्यवस्थाएं प्रभावित हो रही हैं। श्रद्धालुओं को किसी प्रकार दिक्कत न हो और व्यवस्थाएं विधिवत चलती रहें इसके लिए जागेश्वर मन्दिर समिति, प्रशासन और पुलिस की बैठक के बाद धाम में शटल सेवा शुरू कर दी गई है।

इन दिनों प्रतिदिन सैकड़ों श्रद्धालु जागेश्वर पहुँच रहे हैं। सप्तान्त में तो यह भीड़ भयंकर हो जाती है। इससे जाम के साथ ही अन्य व्यवस्थाएं भी संचालित नहीं हो पाती। यह सब देखते हुए एसडीएम भनोली एन.एस.नगन्याल की अगुवाई में प्रशासन और पुलिस की बैठक भी हुई और शटल सेवा शुरू की गई। अब आरतोला के पास ही वाहनों को रोक लिया जा रहा है। मन्दिर समिति और प्रशासन की ओर से पार्किंग संचालित की जा रही है। यही से श्रद्धालुओं को शटल सेवा से आगेश्वर धाम ले जाया जा रहा है। सप्ताह के अन्त में इसके लिये 20 वाहन लगाए जा रहे हैं। अन्य दिनों में 12 वाहनों से संचालन किया जा रहा है। जागेश्वर धाम में अस्थाई चौकी में होमगार्ड व सिपाही तैनात कर सुरक्षा व्यवस्था की जिम्मेदारी दी गई है।

यात्रा सीजन से भरा उत्तराखण्ड उत्सवों की धूम मची

चारधाम यात्रा में रिकार्डतोड़ भीड़ उमड़ी है

पि.हि.प्रतिनिधि

रुद्रप्रयाग/चमोली। चारधाम यात्रा में रिकार्डतोड़ भीड़ उमड़ी है। बद्रीनाथ-केदारनाथ सहित चारधाम यात्रा के लिये जबर्दस्त भीड़ आ रही है। ऐसे में प्रशासन की ओर से पंजीकरण काउंटर बढ़ाने और टोकन बांटकर व्यवस्था को सुचारू किया जा रहा है। चार धाम यात्रा के लिये पंजीकरण का आंकड़ा 25 लाख से पार पहुँच चुका है। इस बार एम्स ऋषिकेश ने चारधाम यात्रियों के लिए इमरजेंसी हेल्पलाइन नम्बर जारी किया है। आपात स्थिति में फंसे तीर्थयात्रियों हेल्पलाइन नम्बर 7060005829 पर कॉल कर सकते हैं। यात्रियों की भारी भीड़ के कारण सड़क किनारे रात गुजारने वालों की संख्या भी काफी है। हाल यह है कि गंगोत्री-यमुनोत्री चारधाम के लिए ऑफलाइन रजिस्ट्रेशन भर चुके हैं। अभी यात्रों को इन्तजार करना पड़ रहा है।

आदि कैलास यात्रा में बुरांश जूस से स्वागत

हल्द्वानी/पिथौरागढ़। कुमाऊँ मण्डल विकास निगम की ओर से संचालित आदि कैलास यात्रा में बुरांश जूस के साथ यात्रियों का स्वागत किया जा रहा है। विभिन्न प्रदेशों से इस यात्रा में शामिल यात्री रोमांचित हैं। काठगोदाम से एकत्रित होकर कैंची धाम के दर्शन, जागेश्वर दर्शन के बाद पिथौरागढ़, धारचूला होते हुए यह यात्रा है। यात्रा के पहले दल में 49 यात्रियों में 31 पुरुष और 17 महिलाएं शामिल हुईं। ज्योलिंकांग तक सड़क बनने से यात्रा में कुछ सुगमता है। यहाँ पहुँचने पर शिव-पार्वती मन्दिर के कपाट परम्परिक रं विधि-विधान से खोले गये। यात्रा से होमस्टे संचालक खुश हैं। अब तक इस यात्रा के लिये हजार से ज्यादा पास जारी हो चुके हैं।

नन्दामाई मंदिर में पूजा अनुष्ठान की तैयारी

मुनस्यारी। 9 जून को मर्तोली स्थित हिमालयी माँ नन्दादेवी मन्दिर में पूजा अनुष्ठान की तैयारी हो रही है। नवनिर्मित मन्दिर के उद्घाटन समारोह के साथ ही इसे पाँचवे धाम के रूप में स्थापित करने के लिये प्रयास किये जा रहे हैं। आयोजन को लेकर प्रबन्ध न्यासी चन्द्र सिंह मर्तोलिया और धाम सिंह मर्तोलिया ने बताया है कि यात्रा मार्ग में तक तक काफी सुधार हो जाएगा। आयोजन के दौरान स्मारिका विमोचन और सांस्कृतिक कार्यक्रम भी रखे गये हैं। हल्द्वानी, मुनस्यारी और मर्तोली में अनुष्ठान की तैयारी को लेकर लगातार मंथन किया जा रहा है। आयोजन को लेकर लोगों में भारी उत्साह है।

यमुनोत्री में गेट सिस्टम, ट्रैफिक प्लान

बड़कोट। श्रद्धालुओं की रिकॉर्ड भीड़ उमड़ने की वजह से यमुनोत्री में गेट सिस्टम लागू कर दिया गया है। उत्तरकाशी के एसपी अर्पण यदुवंशी के अनुसार पालीगाड़ से जानकीचट्टी के बीच यह व्यवस्था लागू की गई है। इसके तहत एक दिन में केवल चार बार ट्रैफिक को छोड़ा जाएगा। तीर्थयात्रियों की भारी भीड़ उमड़ने की वजह से पैदा हुई व्यवस्था के बाद प्रशासन को गेट सिस्टम लागू करना पड़ा है। यह पहला अवसर है कि जब यमुनोत्री में गेट सिस्टम लागू किया गया है।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

पिघलता हिमालय

ठण्डी सड़क

हल्द्वानी में ठण्डी सड़क किनारे बने १२ पार्कों को आधुनिक बनाए जाने के लिये जिलाधिकारी ने विभिन्न विभागों के साथ बैठक कर १५ दिन के भीतर सभी कार्यों की डीपीआर तैयार करने के निर्देश दिए हैं। डीएम वन्दना सिंह ने बैठक में नैनीताल शहर के आन्तरिक मार्गों की मरम्मत और सुधारीकरण, अवशेष कार्य, सभी पार्कों को मल्टीस्टोरी पार्किंग बनाने के लिए डीपीआर बनाने के निर्देश दिए। नैनीताल शहर में ठण्डी सड़क पर रेलिंग का प्लान बनाने, झील के किनारे विद्युत लाइनें सही करने, हल्द्वानी में ठण्डी सड़क पर स्थापित पार्कों का आधुनिकीकरण के निर्देश दिए।

जिलाधिकारी द्वारा नैनीताल और हल्द्वानी में सौन्दर्यीकरण के लिये की जा रही तैयारियों का प्रशंसा की जानी चाहिये लेकिन हल्द्वानी ठण्डी सड़क की सच्चाई भी सबको पता होनी चाहिये। ये ठण्डी सड़क क्या है? दरअसल हल्द्वानी शहर की शुरुआत में इसे संवारने के लिये कई कार्य हुए। इन्हीं में से एक था तिकोनिया से लेकर काठगोदाम तक मुख्य सड़क के समानान्तर एक मार्ग बनाया गया जिसे ठण्डी सड़क नाम से जानते हैं। शुरुआत में चलने के लिये इसमें रोड़ी बिछाई गई थी, इस मार्ग के दोनों ओर छायादार और आम के पेड़ थे। भीषण गर्मी के दिनों में पैदल यात्री इससे होकर आना-जाना करते थे। समय के साथ मुख्य मार्ग में बेहिसाब ट्रेफिक बढ़ चुका है, ऐसे में ठण्डी सड़क और भी जरूरी हो गई है लेकिन ठण्डी सड़क पर डामरीकरण हो चुका है, नैनीताल रोड पर इससे लगे पार्क बने हुए हैं लेकिन ठण्डी सड़क पर जबरन पार्किंग करने वालों के कारण 'ठण्डी सड़क' का उद्देश्य पूरा नहीं हो रहा है। इसलिये जरूरी है कि पार्कों के सुधारीकरण, सौन्दर्यीकरण के साथ ही ठण्डी सड़क के मकसद को पूरा किया जाए। इसे पैदल यात्रियों के लिये सुरक्षित करने से आने वाले समय में काफी सुविधा होगी।

देश-विदेश की प्रमुख घटनाएं

न्यू कैलेडोनिया में उठी आजादी की मांग

पेरिस। प्रशान्त महासागर में स्थित न्ये कैलेडोनिया में लोग फ्रांस से आजादी की मांग कर रहे हैं। इस द्वीपसमूह पर आजादी समर्थक और फ्रांस समर्थकों के बीच तनाव के बाद कर्फ्यू भी लगा। फ्रांसीसी के गृह मंत्रालय ने कहा कि अतिरिक्त पुलिस बल को न्यू कैलेडोनिया भेजा जा रहा है।

साइबर हमलों का शिकार बनीं कम्पनियां

नई दिल्ली। बलते वर्ष याने 2023 में लगभग 64 प्रतिशत भारतीय कम्पनियां रैनसमवेयर हमलों से प्रभावित हुईं। सोफोम की जारी एक रिपोर्ट में कहा गया है कि 2022 की तुलना में 2023 में इन हमलों में गिरावट आई है। रिपोर्ट के अनुसार हमलावरों ने इन कम्पनियों से औसतन 48 लाख अमेरिकी डॉलर फिरौती के रूप में मांगे।

लेजर हथियारों से युक्त ६ नए जहाज मिलेंगे

लन्दन। ब्रिटेन की नौसेना को 6 मल्टी-रोल सपोर्ट जहाज (एमआरएसएस) मिलेंगे। यह जहाज ड्रोन लॉन्च करने में सक्षम और ड्रैगनफायर लेजर से लैस होंगे। द टेलीग्राफ अखबार ने ब्रिटेन के रक्षा मंत्री ग्रांट शाप्स के हवाले से यह जानकारी दी।

चीन कर रहा एआई का दुरुपयोग : अमेरिका

जिनेवा। जिनेवा में प्रौद्योगिकी को लेकर हुई बैठक के एक दिन बाद अमेरिका के अधिकारियों ने चीन द्वार एआई के दुरुपयोग को लेकर चिन्ता व्यक्त की, तो वहीं वीजिंग के प्रतिनिधियों ने प्रतिबन्धों और दबाव को लेकर अमेरिका की आलोचना की। उच्चस्तरीय दूतों के बीच बन्द कमरे में हुई बातचीत में एआई के जोखिमों और इसे प्रवंतिध करने के तरीकों को शामिल किया गया था।

भारत मानवाधिकारों पर नहीं सुनेगा

वाशिंगटन। भरतीय-अमेरिकी सांसदों ने कहा कि मानवाधिकारों पर भारत को व्याख्यान देने से काम नहीं चलेगा। कांग्रेसनल इंडिया कॉकस के सह-अध्यक्ष और कांग्रेसी रो खन्ना ने तीन अन्य भारतीय अमेरिकी सांसदों श्री थानेदार, प्रमिला जयपाल और डॉ. अमी बेरी के साथ इंडियन अमेरिन इम्पैक्ट के शिखर सम्मेलन देसी डिसाइड्स एक पैनल चर्चा में इस मामले पर बात की।

रूस में भारतीयों के लिए होगी वीजा फ्री एंट्री

मॉस्को। भारत और रूस चीन-मुक्त पर्यटक आदान-प्रदान के लिए तैयार हैं। रूस के आर्थिक विकास मंत्रालय में बहुपक्षीय आर्थिक विकास मंत्रालय में बहुपक्षीय आर्थिक सहयोग और विशेष परियोजना विभाग की निदेशक निकिता कोंद्रेयव ने रूस-इस्लामिक वर्ल्ड, कजानफोरम 2024 में आगामी वार्ता के बारे में विवरण साझा किया है। ऐसे में भारत और रूस वीजा-मुक्त पर्यटन आदान प्रदान के लिए जून में चर्चा हो सकती है। साल के अन्त तक इसे अन्तिम रूप दिया जा सकता है।

फसक

दाज्यू, जहाँ देखो मरो-मारो ही हो रही ठैरी

लपट-झपट में संभलना बहुत मुश्किल हो गया है बल

दाज्यू, सबका ध्यान लोकसभा चुनाव के परिणामों की ओर है लेकिन हमें सोच पड़े हैं कि दुनिया का क्या होगा? जहाँ देखो मरो-मारो ही हो रही ठैरी। दुनिया में हथियारों की खरीद, समुद्र में कब्जा, आकाश में डेरा, जमीन पर मारकाट मची है। बांकी अपने आस-पास छुटपुट लगे ठैरे। पुलिस ने हल्द्वानी में जेबकतरों का गिरोह पकड़ा जो पहाड़ के यात्रियों को अपना निशाना बनाते थे। शिकायत मिलने पर पुलिस ने सीसीटीबी चैक करते हुए गिरोह का भण्डाफोड़ किया बल।

दाज्यू, लपट-झपट में सम्भलना बहुत मुश्किल हो गया है बल। दन्या क्षेत्र के अंडोली निवासी 56 वर्षीय एक व्यक्ति के प्राइवेट पार्ट पर एसिड डाल दिया, जिसकी अस्पताल में मौत हो गई। वह काम से गरुड़ाबाज क्षेत्र गए हुए थे। परिजनों की रिपोर्ट पर पुलिस जाँच कर रही है।

काशीपुर के कुण्ड थाना पुलिस व वन विभाग ने लाखों की कीमती खैर की लकड़ी बदामद की। कैंटर में सवार तीन लोग भाग गये बल। किच्छा में भी वन विभाग की टीम ने लाखों रुपये कीमत की सेमल की लकड़ी से भरी ट्रैक्टर ट्राली पकड़ ली। दाज्यू, लकड़ी चोरी तो पुराना धन्धा ठैरा। आजकल ऑनलाइन वाला काम बहुत होने लगा है। कौन किसको खड़े-खड़े चपत लगा देगा कहना कठिन है। हमें तो लग रहा है आने वाले समय में बटन दबाते ही घर से गायब होने लगेंगे। पुलिस साइबर सेल वाले जागरूकता अभियान चला रहे हैं लेकिन इससे भी क्या होता है। रुद्रपुर के ट्रांजिट कैम्प क्षेत्र में जगतपुरा निवासी दीपक नैनवाल को ऑनलाइन कार्य करने का झांसा देकर 6. 25 लाख ठग लिये। पीड़ित अब साइबर क्राइम सेल से कार्रवाई को कह रहा है।

अब बताओ, पन्तनगर एयरपोर्ट को बम से उड़ाने की धमी ईमेल से मिली थी। धमकी मिली तो सुरक्षा को सबने चौकन्ना होना ही था। भगवान जाने, ये धमकीबाजों को नंग्योई करने में क्या मिलता होगा? सुप्रीम कोर्ट भ्रामक विज्ञापन मामले में बहुत गुस्से में लग रहा है। योग गुरु रामदेव, पतंजलि के प्रबन्ध निदेशक आचार्य बालकृष्ण के खिलाफ चल रही अवमानना कार्यवाही के दौरान भारतीय मेडिकल एसोसिएशन के अध्यक्ष अशोकन को भी फटकार लगा दी। कहा- 'आप सोफे पर बैठकर इंटरव्यू देते हुए कोर्ट की खिल्ली नहीं उड़ा सकते।' दाज्यू, कोर्ट तो कोर्ट ही ठैरी।

चमोली के डिप्टी जेलर पर दुष्कर्म का मुकदमा दर्ज करवाया है बल। आरोपित की तबीयत बिगड़ी और उसे जिला अस्पताल में भर्ती कराना पड़ा। ईश्वर सबकी भली करे। नन्दा-सुनन्दा दैण हो। गोलज्यू न्याय करें। इससे ज्यादा हम कर भी क्या सकते हैं?

हल्द्वानी में नशीले इंजेक्शन की तस्करी करने वाला पुलिस ने पकड़ा है। दाज्यू, किस्म-किस्म की तस्करियां होने लगी हैं। सब गुस्से से भरे हैं। अब देखो, रुद्रपुर एएलसी कार्यालय में तैनात एक नशेड़ी अनुसेवक ने कार्यालय में जमकर हंगामा कर डाला और बाजपुर के श्रम प्रवर्तन अधिकारी ने रोकने का प्रयास किया तो हाथापाई कर कपड़े फाड़ डाले।

दाज्यू, मरो-मारो के इस जमाने में तकदीर और तस्वीर कैसी बनेगी पता नहीं है। रुद्रपुर में पूर्व विधायक राजकुमार ठुकराल ने यूपी से आए लोगों को फर्जी वोटर आईडी कार्ड के लिए आवेदन पत्र भरने के साथ इस काम में लिप्त भाजपा नेताओं के खिलाफ कार्रवाई की मांग की। इसके विरोध में भाजपा उत्तरी मण्डल अध्यक्ष धीरेश गुप्ता के नेतृत्व में कार्यकर्ताओं ने प्रदर्शन किया और डीएम को ज्ञापन सौंपा। दाज्यू, सबकी अपनी तकदीर है लेकिन तस्वीर बनाने के लिये फुदकने वाले ठैरे।

-तुम्हारा भुली झकरुवा

उत्तराखण्ड उच्च...

प्रथम पृष्ठ का शेष

में मौजूद संस्थाओं, कार्यालयों को पहाड़ से उठा कर मैदानी क्षेत्रें में ले जाने की। ऐसा करने से एक पर्वतीय राज्य के रूप में उत्तराखंड की जरूरत पर ही प्रश्नचिन्ह लग जाता है। यह कहना भी सही नहह्र है कि नैनीताल कनेक्टिविटी की ख्रष्टि से कमजोर है। वस्तुत: नैनीताल सबसे आसान पहुँच वाला पर्यटक स्थल है और इसी कारण लोकप्रिय भी है। मगर अंधाधुंध ट्रैफिक के चलते यहाँ पहुँचने में कभ्र बार जरूरत से ज्यादा विलम्ब हो जाता है। मगर चाहे अनियंत्रित ट्रैफिक का मामला हो, पर्यटकों की भीड़ का मामला हो, स्वास्थ्य का या शिक्षा सुविधा का, माननीय उच्च न्यायालय को अपनी प्रबल शक्तियों का उपयोग कर प्रदेश सरकार को इन परिस्थितियों को ठीक करने के लिये विवश करना चाहिये। हाईकोर्ट को स्थानान्तरित करना समस्या का समाधान नहीं है।

नैनीताल में अधिवक्ताओं और वादकारियों के लिये आवास तथा महंगाई का जिक्र माननीय न्यायालय ने अपने आदेश में किया है और भविष्य में इसके और विकट होने की सम्भावना जताई है। कुछ हद तक यह आशंका सही हो सकती है। मगर न्यायालय को यह ध्यान देना चाहिये कि भारत का सर्वोच्च न्यायालय और मौजूदा मुख्य न्यायाधीश न्यायपालिका को लगातार पेपरलैस और वर्चुअल व्यवस्था की ओर ले जा रहे हैं। इस बात का जिक्र माननीय उच्च न्यायालय ने अपने उपरोक्त निर्णय में भी किया है। यदि इस दिशा में हम तेजी से बढ़ सकें तो न तो अधिवक्ताओं को और न ही वादकारियों को सशरीर न्यायालय में उपस्थित होना होगा और न नैनीताल आने की जरूरत पड़ेगी। इससे आगामी समय में अदालती काम के लिये नैनीताल में भीड़ बढ़ने के बदले कम ही होगी। वादकारियों और अधिवक्ताओं के समय और श्रम की बचत होगी। खर्चा भी कम होगा। उत्तराखण्ड उच्च न्यायालय पेपरलैस और वर्चुअल व्यवस्था में तेजी से काम कर पूरे देश के लिये एक उदाहरण प्रस्तुत कर सकता है।

हम विधिसम्मत रूप से उत्तराखण्ड उच्च न्यायालय के सामने रिव्यू पैटिशन के रूप में न्यायालय को नैनीताल से अन्यत्र शिफ्ट करने का निर्णय वापस लेने का निवेदन करने जा रहे हैं और हमें आशा है कि माननीय उच्च न्यायालय हमारे इस निवेदन को स्वीकार करेगा।

--राजीव लोचन साह, अजय रावत, शेखर पाठक, अनूप साह, ज़हूर आलम, पी. सी. तिवारी, शीला रजवार व डी. के. जोशी

श्रद्धांजलि

पत्रकार विजय तिवारी

हल्द्वानी। वरिष्ठ पत्रकार विजय तिवारी का 14 मई 24 को निधन हो गया। रामपुर रोड गली नम्बर 7 निवासी स्व. तिवारी 'लोकालय' साप्ताहिक समाचार पत्र के सम्पादक थे। उत्तर प्रदेश में मंत्री रहे गोवर्धन तिवारी के सुपुत्र विजय तिवारी को कभी भी इस बात का गुमान नहीं रहा कि वह एक मंत्री के बेटे हैं। बहुत ही सहज जीवन जीते हुए लोकालय का सम्पादन व ट्रेडिल मशीन में कम्पोजिंग करते थे। पत्रकारिता जगत में बढ़ती जा रही उच्छृंखलता व गिरावट को देख खिन्न होकर उन्होंने अपने को सीमित कर लिया था। पिघलता हिमालय परिवार स्व.तिवारी को श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

उमेद सिंह भण्डारी

गंगोलीहाट। पाताल भुवनेश्वर मन्दिर समिति के कोषाध्यक्ष उमेद सिंह भण्डारी का उनके आवास पर 14 मई 24 को निधन हो गया। वह दशकों तक मन्दिर के पुजारी रहे और कोषाध्यक्ष पद संभाला। पि.हि. परिवार स्व.भण्डारी को श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

चिन्ता

क्या गुम हो जायेगी पहाड़ों में शुद्ध पेयजल के लिए बनी भूमिगत जल संरक्षण की सबसे पुरानी तकनीक?

डॉ. हरीश चन्द्र अन्डोला

उत्तराखण्ड का एक बड़ा हिस्सा बर्फ से आच्छादित रहता था। जिसे हिमालय कहते हैं, इसी हिमालय से निकलती हैं दर्जनों जीवनदायिनी नदियां जो पहाड़ों से बहती हुई मैदानों तक आती हैं और समुन्दर में मिल जाती हैं। अपनी इस यात्रा के दौरान यह नदियां लोगों की प्यास बुझाती हैं, खेतों में अनाज उगाती हैं और इन्सान के जीवन का एक अभिन्न हिस्सा बन जाती हैं, लेकिन यह एक विडम्बना ही है कि उत्तराखण्ड में पहाड़ों पर बर्फ गिरती है, हिमालय सालों भर बर्फ से ढका रहता है, जहाँ से नदियां निकलती हैं पर यहाँ के अधिकतर पहाड़ आज पेयजल की किल्लत से जूझ रहे हैं।

हर साल मार्च से लेकर जुलाई, अगस्त तक का महीना यहाँ रहने वाले लोगों के लिए काफी कठिन होता है। गाँव में लोगों को दूर दूर से पानी भरकर लाना पड़ता है क्योंकि इस वक्त तक अधिकतर जल स्रोत सूख जाते हैं। वही शहरों में जहां आधुनिक पाइप लाइन लग चुकी है लोग रात रात भर उठ कर पानी का इन्तजार करते हैं, जल निगमों के टैंकरों से पानी बांटा जाता है। इसी साल की अगर हम बात करें तो अल्मोड़ा, चम्पावत डीडीहाट और गढ़वाल के कई कस्बे ऐसे हैं जहाँ लोग पानी की किल्लत से जूझ रहे हैं । प्राकृतिक स्रोत सूख चुके हैं, आधुनिक पाइप लाइनों में पानी नहीं आता, जल संस्थान और निजी टैंकरों के सहारे यहाँ लोग अपना जीवन जी रहे हैं। इस सबके हल के रूप में जो व्यवस्था सामने आ रही है वह है पेयजल योजनाओं की, लोग मांग करते हैं कि उनके इलाके में पेयजल योजनाएं लगाम्र जाएं और सरकार जितना हो सके उतनी कोशिश करके ऐसा करती हैं, लेकिन तब भी लोगों की परेशानियां दूर नहीं होती। अब जरा उत्तराखण्ड के पहाड़ों की पुरानी व्यवस्था की ओर जाएं तो हम देखेंगे कि हर गाँव में बहुतायत में धारे और नौले जैसे जल स्रोत होते थे जो आज भी हैं, लेकिन क्या कारण है कि आज गमह्व के वद्र इन जल स्रोतों में पानी सूख जाता है। थोड़ा सा अगर शोध किया जाए तो कारण आपके सामने आ जाएंगे, पारम्परिक जल स्रोतों के आसपास के पेड़ काटे जा चुके हैं, पुराने चौड़ी पत्ती वाले पेड़ों की जगह यूकेलिप्टस और चीड़ के पेड़ों ने ले ली है और यह पेड़ जहाँ होते हैं उसके आसपास का पानी खत्म कर देते हैं। अन्धाधुन्ध निर्माण कार्य, पहाड़ों में निर्माण कार्य के लिए ब्लास्टिंग का उपयोग करना, जल स्रोतों के आसपास की जमीन पर निर्माण कार्य कर बरसाती पानी को जमीन के अन्दर जाने से रोकना, ऐसे कई कारण हैं जो सामने आएंगे। इन पेड़ों में जमीन को बांधे रहने की अद्भुत क्षमता होती है, साथ ही साथ यह पेड़ गमह्व के मौसम में अपने आसपास भूमिगत जल के स्तर को भी बनाए रखते हैं, यही कारण है कि उत्तराखण्ड में नालों, गधेरों, धारे और नौलों के आसपास इन पेड़ों को बहुतायत में पाया जाता था। एक बार फिर अगर उत्तराखण्ड के पारम्परिक जल स्रोतों के आसपास चौड़ी पत्ती वाले ऐसे पेड़ों को बढ़ावा दिया जाए तो निश्चित रूप से यह जल स्रोत पुनः रिचार्ज हो जाएंगे।

इसके अलावा प्राकृतिक जल स्रोतों के आसपास हैण्डपम्पों को भी हतोत्साहित करने की जरूरत है। नौले कुमाऊँ में सामान्य जल संचयन संरचनाएँ हैं लेकिन गढ़वाल में कम लोकप्रिय हैं। प्राचीन काल में धारा और नौला जैसी सार्वजनिक जल सुविधाओं का निर्माण पवित्रता का कार्य माना जाता था। कुमाऊँ में कत्यूरी और चंद युग के दौरान बने नौले आज भी उपयोग में हैं। उदाहरण के लिए, सूर्यकोट (अल्मोड़ा) में 1000 साल पुराना नौला , गंगोलीहाट (पिथौरागढ़) में हाट कालिका मन्दिर के पास 700 साल पुराना नौला, राजा रामचन्द्र देव द्वारा निर्मित, बागेश्वर जिले में 7वीं शताब्दी में निल्मत गढ़शेर नौला। और 1272 में राजा थोरचंद द्वारा निर्मित बालेश्वर नौला। रानीधारा नौला (अल्मोड़ा), पट्टियानी नौला और शैलगांव (अल्मोड़ा) का तुलारामेश्वर नौला और पहाड़पानी नौला (नैनीताल) कुछ अन्य उल्लेखनीय उदाहरण हैं। कुछ नौलों को पत्थर पर खूबसूरती से उकेरा गया था। ऐसा ही एक उदाहरण चम्पावत जिले के ढकाना गाँव में एक हथिया नौला है। प्राकृतिक संसाधनों का ह्रास वैश्विक स्तर पर मानव समाज के समक्ष सबसे बड़ी चुनौतियों में से एक है। पारिस्थितिकी के सुधार के लिए इनका संरक्षण महत्वपूर्ण है। पानी, जो पृथ्वी पर जीवन के लिए सबसे महत्वपूर्ण प्राकृतिक संसाधन है और 2 वीं सदी में सबसे दुर्लभ वस्तु है, विभिन्न मानवजनित गतिविधियों के कारण भी प्रदूषित हो रहा है। हिमालयी समुदायों के पूर्वजों ने पानी को शुद्ध और प्रदूषण मुक्त रखने के लिए कुछ बुनियादी सिद्धान्तों का पालन किया। इनमें जलस्रोत को पवित्र मानना शामिल है। जल के स्रोत पर मन्दिर का निर्माण पानी के वेग में बाधा न डालना और पानी का मितव्ययता से उपयोग करना। जलस्रोत के किनारे बरगद या पीपल जैसे पवित्र वृक्ष लगाना एक आम प्रथा थी और पुण्य का काम माना जाता था। इस अभ्यास से पानी के वाष्पीकरण को रोकने में मदद

मिली। नौला और धारा के अलावा चाल और खाल, जो पहाड़ों की ढलानों पर बने छोटे कृत्रिम तालाब हैं, कई स्थानों पर नियमित रूप से बनाए जाते थे। ये तालाब न केवल वर्षा जल संचयन के पारम्परिक तरीके थे जो भूजल स्तर को बनाए रखने में मदद करते थे बल्कि जंगलों में घरेलू और जंगली जानवरों को भी पानी उपलब्ध कराते थे। ऐसी पारम्परिक जल संसाधन प्रबन्धन प्रणालियाँ अब वन और वृक्ष आवरण की कमी, अनियमित और अप्रत्याशित वर्षा पैटर्न, पारम्परिक ज्ञान की हानि, आधुनिकीकरण और अनियंत्रित विकास के कारण ख़त्म हो रही हैं। ये प्राकृतिक जल संसाधन तभी लोकप्रिय ध्यान का लक्ष्य बनते हैं जब आधुनिक जल पाइपलाइनें काम करना बन्द कर देती हैं। इन महत्वपूर्ण जल संसाधनों की उपेक्षा के पीछे महत्वपूर्ण कारणों में आधुनिकीकरण भी है, जिसके कारण बेहतर रोजगार के अवसरों के लिए ग्रामीणों के पास के कस्बों और शहरों में पलायन के कारण रखरखाव की कमी के साथ-साथ ग्रामीण समुदायों के बीच पारम्परिक ज्ञान प्रणालियों का नुकसान हुआ है। फिर भी आशा है कि हम इन संसाधनों का संरक्षण कर सकते हैं। कई ग्रामीण अभी भी स्थानीय नौला या ाारा का पानी पीना पसन्द करते हैं और पाइपलाइनों के पानी का उपयोग केवल अपनी अन्य दैनिक जरूरतों जैसे कपड़े और बर्तन धोने और स्नान के लिए करते हैं। इन लोगों द्वारा अपनाई जाने वाली कुछ पारम्परिक प्रथाएं इतनी वैज्ञानिक हैं कि अगर उन्हें हममें से बाकी लोगों द्वारा अपनाया जाए, तो जल संकट की समस्या हल हो सकती है। यदि पहाड़ी क्षेत्रों को किसी भी बड़े जल संकट से बचाना है, तो चाल और खाल जैसी पारम्परिक वर्षा जल संचयन विधियों के साथ-साथ नौलों और ाारों जैसी जल संचयन की पुरानी विधियों को बनाए रखना और संरक्षित करना बहुत आवश्यक है। आवास उपयुक्तता मानचित्रण के आधार पर ओक, चेस्टनट, देवदार, बुरांस और फाइकस ςजातियों जैसे चौड़ी पत्ती वाले पेड़ों का रोपण, ऐसे प्रयासों को पूरक कर सकता है। पानी और सम्बन्धित प्राकृतिक संसाधनों के प्रबन्धन और योजना को मजबूत करने और सुधारने में बहुत कुछ हासिल किया जा सकता है। हालाँकि ठोस परिणाम तभी सम्भव हैं जब धन की कोई हेराफेरी न हो और कार्य वैज्ञानिक रूप से दीर्घकालिक दृष्टिकोण से डिजाइन किया गया हो और ईमानदारी से कार्यान्वित किया गया हो। किसी भी

सरकार ने इस ओर ध्यान नहीं दिया है। जल नीति निर्धारित कर प्राकृतिक स्रोतों के संरक्षण व इनकों पुर्नजीवित करने की पहल की जानी चाहिए।

ज्योतिष की बातें - 179

31 मई 2024 को बुध मित्रराशि वृषभ में प्रवेश करेगा। वहाँ पर सूर्य व गुरु से युति भी होगी अतः बुध अत्यन्त शुभ फलदायक रहेगा। अगले 15 दिन बुध बुद्धि, वाणिज्य, व्यापार, लेखन, गणित आदि अपने कारक विषयों में मेष, कुम्भ, धनु, तुला, सिंह व कर्क राशि के जातकों को अत्यन्त शुभफल प्रदान करेगा।

1 जून 2024 को मंगल राहु से मुक्त होकर स्वराशि मेष में प्रवेश करेगा लेकिन वहाँ पर शनि की तृतीय दृष्टि भी होगी। फिर भी कुल मिलाकर मंगल बलवान रहेगा। फलदीपिका के अनुसार मंगल तीसरे, छठवें और ग्यारहवें स्थान पर शुभफल प्रदान करता है तथा कर्क और लसह राशियों के लिए योगकारक भी होता है अतः मंगल पराक्रम, खेलकूद स्वास्थ्य आदि अपने कारक विषयों में अगले 41 दिन कुम्भ, वृश्चिक, सिंह, कर्क व मिथुन राशि के जातकों को अत्यन्त शुभफल प्रदान करेगा।

1 जून 2024 को, अभी तक अस्त चल रहा, गुरु वृषभ राशि में पूर्व दिशा में उदय हो जाएगा अतः गुरु से प्राप्त होने वाले शुभाशुभ ल्ल अब स्पष्ट रूप से प्राप्त होने लगेंगे। शुक्र अभी भी अस्त है अतः अभी स्थगित चल रहे शुभ कार्यों में कुछ आपातकालीन शुभकार्य अब प्रारम्भ हो जाएंगे।

शुभं भवतु !! **-ओंकार नाथ कोष्टा**

ज्योतिर्विद् एवं आयुर्विद्

सम्यक् विचार- 70

वोट के लिए रिश्वत

चुनाव प्रचार चल रहा है। सभी पाल्टयाँ वोटरों को तरह-तरह का लालच दे रही हैं। कोई 200 यूनिट बिजली फ्री देने की बात कर रहा है, तो कोई 300 यूनिट बिजली फी दे रहा है । कोम्र किसानों को बिजली फी दे रहा है, कोम्र पानी फ्री दे रहा है। कुछ लोग बिना किसी बात के 2 हजार रुपये प्रति माह खाते में फ्री में डालने की बात कर रहा है तो कोई 72 हजार रुपये साल में देने की बात कर रहा है। कोई कर्ज के ब्याज को माफ करने की बात कर रहा है तो कोई पूरे कर्ज को ही माफ करने की बात कर रहा है। कोई तो साल में एक लाख रुपए महिला के खाते में डालने की बात कर रहा है। कुछ तो ऐसे भी हैं जो कच्चे मकान की जगह पक्के मकान देने की बात कर रहा है।

दो बातें हैं यदि सब कुछ फ्री में ही मिल जाएगा तो व्यक्ति परिश्रम क्यों करेगा! दूसरी बात इतना सब कुछ फ्री देने के लिए पैसा आएगा कहाँ से? जनता को इस बात को समझना चाहिए। इतना अधिक फ्री देने के लिए कितना टैक्स लगाया जाएगा! जनता को यह वास्तव में जन सुविधा नहीं है बल्कि मतदाता से वोट पाने के लिए उसको दी गम्र रिश्वत ही है। सभी पार्टियाँ लालच देने में एक समान है। पार्टियों के बीच में अधिक से अधिक लालच अर्थात् जनता को रिश्वत देने की होड़ लगी हुई है। सब के सब ठंड में भेड़ों को कंबल देना चाहते हैं। लेकिन इतने कंबल आएंगे कहाँ से? उसके लिए उन्हीं भेड़ों की खाल नोची जायेगी। इसलिए लालच में न आएँ, सच्चाई समझें ।

-सरल

जमरानी बांध परियोजना को जल्द शुरू किया जाए : वर्मा

हल्द्वानी। जमरानी बांध निर्माण संघर्ष समिति के संयोजक नवीन वर्मा ने कहा है कि क्षेत्र की पेयजल आपूर्ति के लिए जमरानी बांध का बनना नितान्त आवश्यक है। उन्होंने कहा कि हल्द्वानी महानगर में प्रतिवर्ष आबादी तेजी से बढ़ रही है। जिसकी पेयजल आपूर्ति गौला नदी और कुछ ट्यूवेल पर निर्भर है। जबकि गौला नदी का जलस्तर प्रतिवर्ष कम होता जा रहा है। पर्यावरण असन्तुलन एवं भूमिगत जलस्रोतों के सूखने से भी गौला नदी का जलस्तर कम हो गया है।

संघर्ष समिति के वरिष्ठ पदाधिकारी मोहन सिंह बोरा, एन.सी.तिवारी, राम सिंह बसेड़ा ने भी सरकार से मांग की है कि लगातार बढ़ती आबादी और घटते जलस्तर को दृष्टिगत रखते हुए बांध निर्माण अविलम्ब शुरू कर दिया जाना चाहिए। लक्ष्मण सिंह रजवार, हेमन्त पाठक, सतेन्द्र सिंह शम्मी ने कहा कि ट्यूबवेल पर निर्भरता से काम नहीं चलने वाला, क्योंकि भाबर क्षेत्र में ट्यूबवेल का स्तर एक वर्ष में तीन मीटर तक कम हो जाता है। समिति ने सरकार से मांग की है कि हल्द्वानी क्षेत्र के लोगों की प्रमुख समस्या पर ठोस निर्णय लेते हुए जमरानी बांध निर्माण कार्य शीघ्र प्रारम्भ करया जाए।

सूख रहे जलस्रोतों को सूचीबद्ध करेंगे

पिथौरागढ़। डीएम ने विभिन्न विभागों की बैठक बुलाकर सूख रहे जलस्रोतों की सूची तैयार करने और उनके संरक्षण संवर्द्धन के लिए कार्ययोजना तैयार करने के निर्देश दिए हैं।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

मल्ला जोहार का अधिवेशन ६जून को

मुनस्यारी। मल्ला जोहार विकास समिति का वार्षिक अधिवेशन 6 जून को ज्योति देवेन्द्रा मिलन केन्द्र मुनस्यारी में होगा। समिति के अध्यक्ष श्रीराम सिंह धर्मशक्तू ने बताया कि माइग्रेशन काल में मल्ला जोहार आने-जाने वाले परिवार अपनी समस्याओं के साथ ही सुझाव इसमें रखेंगे। उन्होंने सभी से वार्षिक अधिवेशन में भागीदारी करते हुए सीमान्त क्षेत्र के विकास के लिये जुटने का आह्वान किया।

कोलीढेक झील में नौकायन

लोहाघाट। क्षेत्र की कोलीढेक झील में इन दिनों नौकायन के लिये पर्यटक जुट रहे हैं। जनवरी 2023 में डेढ़ किमी लम्बी, 80 मीटर चौड़ी और 21 मीटर गहरी कोलीढेक झील का लोकार्पण हुआ था। 30 करोड़ रुपये से अधिक की लागत से निर्मित इस झील में मत्स्य विभाग की ओर से एक लाख मत्स्य बीज डाले गये हैं जो 6 माह में विकसित हो जाएंगे।

नैनीताल अवैध निर्माण पर कार्रवाई

नैनीताल। शहर में चल रहे अवैध निर्माण को लेकर जिला प्रशासन व जिला विकास प्राधिकरण समेत अन्य विभागों की संयुक्त टीम का अभियान जारी है। कालाढूंगी मार्ग से निर्माण सामग्री जब्त करने के साथ ही 11 दुकानों को हटाया गया। लेकिन इस बीच यह भी आरोप लगाये जा रहे हैं कि कार्रवाई रसूखदारों पर नहीं हो रही है, केवल फड़-खोखे हटाकर अभियान चलाया जा रहा है।

चुघ समेत ३ की संलिप्तता की जाँच

रुद्रपुर। नानकमत्ता में डेरा कारसेवा प्रमुख बाबा तरसेम सिंह की हत्या में फरार एक लाख के इनामी की तलाश में पुलिस उप्र पंजाब व हरियाणा में दबिश दे रही है। वहीं इस मामले में नामजद गुरुद्वारा प्रबन्ध कमेटी के निवर्तमान प्रधान और सेवानिवृत्त आईएएस हरबंश चुघ, तराई महासभा के उपाध्यक्ष प्रीतम सिंह सन्धू, गुरुद्वारा हर गोविन्द सिंह रतनपुरा नवाबगंज के मुख्य जत्थेदार बाबा अनूप सिंह पर की संलिप्तात की जाँच हो रही है।

बदरीनाथ में नारेबाजी-प्रदर्शन

बद्रीनाथ। धाम में कपाट खुलने के बाद से बामणी गाँव की जनता, हक हकूक धारी, तीर्थ पुरोहित समाज ने प्रशासन और बीकेटीसी के खिलाफ प्रदर्शन किया। स्थानीय व्यापारियों ने भी इनके समर्थन में बाजार बन्द रखा। प्रदर्शनकारियों का आरोप है कि उन्हें मन्दिर दर्शन के पारम्परिक अधिकार से वंचित रखा जा रहा है। प्रशासन और बदरीनाथ मन्दिर समिति मन्दिर में भगवान के दर्शन के लिए वीआईपी संस्कृति और उनकी सेवा में ही लगा है। मन्दिर के सिंहद्वार और इसके निकट नारेबाजी भी हुई।

रामपुर तिराहा काण्ड में २५वें गवाह का साक्ष्य पूर्ण

उत्तराखण्ड आन्दोलन से जुड़े रामपुर तिराहा काण्ड पर आज तक सब न्याय को देख रहे हैं। काण्ड से जुड़े सरकार बनाम राधा मोहन द्विवेदी मामले में 25वीं चश्मदीद गवाह कोर्ट में पेश हुई। इससे पहले बचाव पक्ष के अधिवक्ता ने साक्षी से जिरह की, इसके उपरान्त कोर्ट ने सुनवाई के लिए अगला दिन निर्धारित किया।

तीस वर्ष पूर्व पृथक उत्तराखण्ड राज्य गठन के लिये आन्दोलन के समय 1 अक्टूबर 1994 को आन्दोलनकारियों को दिल्ली जाते समय छपार थाना क्षेत्र के रामपुर तिराहे पर रोक लिया गया था। 2 अक्टूबर को रात को पुलिस और आन्दोलन कारियों के बीच झड़प हुई थी। फायरिंग में सात आन्दोलनकारी मारे गये थे। जबकि पुलिस और पीएसी पर आन्दोलनकारी महिलाओं से दुष्कर्म और छेड़छाड़ तथा लूट के आरोप लगे थे। मामले में सीबीआई ने विवेचना कर कोर्ट में चार्जशीट राधा मोहन द्विवेदी मामले की सुनवाई कुछ दिन पहले ही एडीजे अंजनी कुमार की पास्को कोर्ट से स्थानान्तरित हो गई थी।

माँ वाराही धाम में महायज्ञ की तैयारी

देवीधुरा। माँ वाराही धाम देवीधुरा में 8 जून से 16 जून तक विश्व कल्याण महायज्ञ होगा। नौ दिनी महायज्ञ में कथा प्रवचन व धार्मिक अनुष्ठान होंगे। समापन पर भण्डारे किया जायेगा। तैयारियों को लेकर हुई बैठक में तय किया गया कि शुभारम्भ पर कलश यात्रा निकाली जाएगी। भण्डारे की व्यवस्था चार खाम सात थोक के लोग करेंगे। मन्दिर को आकर्षक तरीके से सजाया जायेगा। जल्द प्रशासन से शिष्टमण्डल मिलेगा।

गंगोलीहाट नवोदय स्कूल में हमेशा कुछ न कुछ बबाला होता रहा है, स्कूल जाने से मना किया

गंगोलीहाट। राजीव गांधी नवोदय विद्यालय गंगोलीहाट में शुरू से ही हमेशा कुछ न कुछ बबाल होता रहा है। अब ताजा मामले में सीनियर ने जूनियर का उत्पीड़न किया और बच्चों ने स्कूल जाने से मना दिया। मामले में जाँच कमेटी की रिपोर्ट सहित सख्त कदम उठाने की बात कही जा रही है लेकिन इस प्रकरण के बाद प्रशासन ने एकदम सख्त हो जाना चाहिये क्योंकि बार-बार की घटनाओं से सबक नहीं लिया गया तो अभिभावकों को शिक्षा के मन्दिरों में कैसे भरोसा होगा। दूर-दूर से अपने बच्चों को आशा-उम्मीद के साथ भेजते हैं। बताया जा रहा है कि नवोदय के आवासीय विद्यालय में 150 छात्र-छात्राएं हैं, इनमें गणाई गंगोली के तीन छात्र-छात्राओं ने सीनियर पर उत्पीड़न का आरोप लगाते हुए स्कूल जाने से मना कर दिया। जाँच उपरान्त आरोपी 12 वीं कक्षा के छात्र को विद्यालय से निष्कासित कर दिया गया। प्राचार्य शम्भू दयाल यादव ने कहा कि स्कूल का शैक्षणिक माहौल खराब करने वालों पर कड़ी कार्रवाई की जाएगी।

केमू ई-टिकटिंग की व्यवस्था शुरू

हल्द्वानी। कुमाऊँ मोटर ओनर्स यूनियन लिमिटेड (केमू) ने एक बस में ई-टिकट की व्यवस्था शुरू कर दी है। साथ ही शेष बसों में ई-टिकट शुरू करने के लिए परिवहन विभाग से तीन माह का समय मांगा है।

बताते चलें कि 9 जनवरी 2024 को आरटीए की बैठक में बसों के लिए अनिवार्य रूप से ई-टिकट शुरू करने का निर्णय लिया गया था। केमू ने ट्रायल के तौर पर एक बस में ई-टिकट से किराये का भुगतान शुरू कर दिया है। केमू यूनियन के अधिशासी निदेशक हिम्मत सिंह नयाल की ओर से परिवहन विभाग को भेजे गए पत्र में कहा गया है कि वर्तमान में विवाह व पर्यटन सीजन होने के कारण यात्रियों का अत्यधिक दबाव रहता है। जिस कारण सभी वाहन परिचालकों को एक साथ ई-टिकटिंग का प्रशिक्षण देना सम्भव नहीं है। उन्होंने विभाग से सभी बसों में ई टिकटिंग चलाने के लिये 3 माह का समय मांगा है।

परिक्रमा

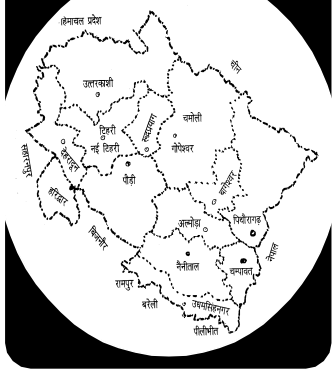

अवैध खनन के विरोध में प्रदर्शन

भीमताल। भीमताल और आसपास के क्षेत्र में लम्बे समय से अवैध खनन की शिकायत करते हुए ग्रामीणों ने प्रदर्शन किया।

क्षेत्रवासियों का आरोप है कि अवैध कार्य को रोकने की मांग करने के बाद भी विभाग कार्रवाई को तैयार नहीं है। विभाग को सूचना देने के बाद भी कार्रवाई नहीं की गई। ऐसे में अब अवैध खनन और गाँव में मंडरा रहे खतरे को लेकर ग्रामीण बोहराकून के ग्रामीणों ने बताया कि निजी बिल्डर ने सीधे खड़े पहाड़ की जमीन का अत्यधिक खनन कर दिया, जिस कारण पहाड़ पर काफी दरारें पड़ गई हैं।

ग्रामीणों ने अपनी जानमाल का खतरा बताते हुए तुरन्त कार्रवाई की मांग की है। यहाँ पहाड़ में लगातार भूस्खलन के दहशत का माहौल है। क्षेत्रवासियों ने लिखित शिकायत थाने में दी। ग्रामीणों ने विल्डर के खिलाफ धरना प्रदर्शन करते हुए कहा कि यदि अब भी सुनवाई नहीं हुई तो उग्र आन्दोलन करेंगे। प्रदर्शनकारियों में प्रिन्स खड़ायत, सीमा बोहरा, जया बोहरा, भावना खड़ायत, शुभम बोहरा, चेतन बोहरा, निशा बोरा आदि थे।

धर्म व पद से खिलवाड़ नहीं होने देंगे

जोशीमठ। ज्योतिष एवं द्वारका शारदा पीठाधीश्वर जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी प्रज्ञानन्द सरस्वती महाराजने कहा कि द्विपीठाधीश्वर शंकराचार्य स्वामी श्री स्वरूपानन्द सदस्वती महाराज के ब्रह्मलीन होने के उपरान्त दोनों पीठों के आचार्य को लेकर जो हुआ वह धर्म के अनुरूप नहीं हुआ। सनातन धर्म की रक्षा के लिये धर्म के अनुरूप धर्म की व्यवस्था का संचालन किए जाने की जरूरत है। स्वामी प्रज्ञानन्द महाराज भगवान बद्रीविशाल के कपाट खोले जाने के अ वसर पर बदरीनाथ पहुँचे थे। धार्मिक कार्यक्रम में सम्मलित होने के उपरान्त पत्रकारों से बात करते हुए उन्होंने कहा कि शंकराचार्य का धर्म की रक्षा का पद है सम्पत्ति का नहीं। कहा कि देश के मूर्धन्य विद्वानों, काशी दण्डी सभा व सन्त समाज ने उन्हें धर्म की रक्षा के लिए ही दोनों पीठों का आचार्य पद ग्रहण करने का आग्रह किया।

नौठा कौथीक के अंत में चले लट्ठ

गोपेश्वर। आदिबदरी के प्राचीन ऐतिहासिक नौठा कौथीक के अन्तिम दिन चले लट्ठ। प्रतीकात्मक संघर्ष को देखने के लिये भारी संख्या में भीड़ उमड़ी। एक घण्टे तक लाठी-डण्डे से लड़ने के पश्चात सभी लोग गले मिले।

मन्दिर कमेटी अध्यक्ष जगदीश बहुगुणा ने मालगुजार दिनेश सिंह पंवार को फूलमाला पहनाकर तलवार भेंट की। इसके बाद नृत्य दल के सभी सदस्रों का तिलक लगाकर स्वागत किया गया। नृत्य शुरू होते ही दो दलों के बीच खूनी संघर्ष का प्रतीकात्मक युद्ध होने लगा। इसके बाद सभी लोग गले मिले। मन्दिर परिसर में नौठा नासांण की जय, नौठा कौथीक तुर की जय के साथ ही सौहार्दिक नृत्य किया गया। इसके बाद भगवान आदिबदरी को नया अनाज चढ़ाया। इस अवसर पर एसजीआरआर आदिबदरी, महिला मंगल दल खाल व लोक गायक मुकेश कुंवर के गीतों ने लोगों का मन मोह लिया। इस मौके पर जगदीश बहुगुणा, विनोद नेगी, गैंणा रावत, गौतम मिंग्वाल, बलवन्त भण्डारी, नरेन्द्र बरमोला मौजूद थे।

चम्पावत का पहला पशु पुनर्वास केन्द्र

लोहाघाट। नगर से लगे पाटन-पाटनी ग्राम पंचायत में चम्पावत जिले का पहला पशु पुनर्वास केन्द्र शुरू हो चुका है। इसमें घायल एवं बीमार पशुओं का निःशुल्क उपचार किया जायेगा। पेशे से मल्टीनेशनल कम्पनी में इंजीनियर के पद पर कार्यरत किशोर सिंह बिष्ट और आनन्द बिष्ट ने निजी प्रयासों से 15 नाली जमीन लीज पर लेकर इस केन्द्र की शुरूआत की है।

पाटी में रामलीला मंचन

चम्पावत। पाटी ब्लाक में इन दिनों रामलीला मंचन जारी है। एसडीएम रिंकू बिष्ट ने इसका उद्घाटन किया। आदर्श रामलीला कमेटी पाटी-जौलाड़ी के तत्वावधान में यह आयोजन किया जा रहा है। कमेटी के अध्यक्ष राजेन्द्र सिंह लडवाल, पीताम्बर गहतोड़ी, गोकुलानन्द भट्ट, महेश चन्द्र गहतोड़ी, सुरेश भट्ट, आनन्द सिंह मेहता सहित टीम जुटी है।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

टनकपुर डिग्री कालेज को किसकी नज़र लग गई जो इसको डसने वाले मौज मनाते रहे

विवादों से जिनका नाता रहा है वही गुर्राते रहे और सहलाते रहे

शासन-प्रशासन भी अचंभे में है कि यह सब क्या होता रहा है

मुख्यमंत्री कार्यालय में शिकायतों की झड़ी, चर्चा में हैं चालढाल वाले

--रूसा मामले की चर्चा हमेशा से
--विधायक निधि का फर्नीचर सड़ गया
--ईग्रन्थालय का मामला क्या है?
--ओपन की परीक्षाओं का वित्तीय मसला
--छात्र-छात्राओं के गम्भीर आरोप
--छात्रसंघ चुनाव प्रकरण कोर्ट में
--प्रवक्ताओं का सेवाकाल कैसा रहा?
--सौतेले व्यवहार का आरोप

जाँच को लेकर छात्रों ने मोर्चा खोला है

चम्पावत। जिले का माल-भाबर कहा जाने वाला टनकपुर प्राचीन नगरी और कुमाऊँ का प्रवेश द्वार है। अंग्रेजों के समय मि.टनल द्वारा इस नगर का प्लान बनाया गया और इसकी चौड़ी सड़कों सहित इसका डिजाइन मोहित करता है। शारदा के तट पर पूर्णागिरी के भक्तों का स्थल टनकपुर मुख्यमंत्री पुष्कर धामी का विधानसभा क्षेत्र भी है। ऐसे सबको उम्मीद है कि आने वाले दिनों में यहाँ बेहतरी होगी परन्तु टनकपुर के डिग्री कालेज में जिस प्रकार के तमाशे होते रहे हैं वह उच्चशिक्षा को कलंकित करने वाले कहे जाएंगे। पूरा इलाका सवाल कर रहा है कि आखिर इस कालेज को किसकी नज़र लग गई जो इसको डसने वाले मौज मनाते रहे। विवादों से जिनका नाता है वही गुर्राते रहे सहलाते रहे। कालेज के हालातों की जानकारी सीएम कार्यालय में भी है। मुख्यमंत्री कार्यालय में शिकायतों की झड़ी के अलावा चालढाल वालों की चर्चा खुलेआम होने लगी है।

अभी ताजा चर्चित प्रकरण भूगोल के प्रवक्ता से जुड़ा है। जिनपर छात्रा सहित तमाम छात्र संगठनों ने अभद्रता का आरोप लगाते हुए जबर्दस्त प्रदर्शन किया। जबकि उक्त प्रवक्ता आरोपों को निराधार बता रहे थे। टनकपुर कालेज में सेवा के बाद नागनाथपोरखरी कालेज गये और पुन: टनकपुर कालेज में ही स्थानान्तरित होकर आए। छात्र-छात्राओं का आरोप है कि यह भेदभाव करने साथ ही अपने तेवर दिखाते हैं। प्रयोगात्मक के नाम पर कई की ड्यूटी लगवाकर ऊँची आवाज में अपना माहौल बताते हैं। प्राचार्य कक्ष में हंगामे के दौरान स्व वित्तपोषित योगा के मदन सिंह ने भी इनपर उत्पीड़न का आरोप लगाया। छात्र संघ, पूर्व छात्र संघ, अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद सहित, दूसरे संगठन से जुड़े नेताओं ने भी प्रदर्शन करते हुए मुख्यमंत्री, शिक्षामंत्री से इनकी जाँच करवाने की मांग की।

बात यदि टनकपुर डिग्री कालेज की करें तो बहुत ही उम्मीदों के साथ खुला था। तत्कालीन विधायक हेमेश खर्कवाल ने इसमें रूचि लेते हुए इसके हर अभियान को आगे बढ़ाने में संरक्षण दिया। प्राचार्य प्रो.डी.एन.जोशी ने भी इसे बेहतर बनाने में कोई कसर नहीं छोड़ी। इस बीच कालेज का भवन बनने पर यह शिफ्ट हो गया लेकिन विवादों से नाता रखने वाले इससे जुड़ चुके थे। पूरे टनकपुर में ऐसे प्रवक्ताओं की चर्चा है जो अपने कर्मों से परेशान रहे। कालेज में कई मौकों पर छात्र-छात्राओं और समाजसेवियों ने आकर ऐसे प्रवक्ता को खुलेआम खरी-खोटी सुनाई। ऐसे विवादित अपनी कुण्ठाओं को टनकपुर में फोड़ते रहे हैं और आम जनता व विद्यार्थियों को नासमझ मानने की जिद करते रहे। ऐसे में क्षेत्रवासियों ने इनका पुराना इतिहास तलाशा और उसकी सार्वजनिक व्याख्या कर डाली। प्राचार्य जी.प्रकाश के कार्यकाल में एक बार छात्र संघ चुनाव में पूरी रात पूरे स्टाफ को बन्धक बनना पड़ा। तब भी प्रवक्ता को खुलेआम काफी कुछ कहा गया। सार्वजनिक रूप से जिस प्रकार का तमाशा कालेज में हुआ, उसकी चर्चा पूरे प्रदेश व बाहर तक रही है।

कालेज में रूसा मद से भवन बनने व सामग्री क्रय का कार्य हुआ। इसकी चर्चा कभी भी थमी नहीं। आखिर यह सब क्या है? वाणिज्य संकाय भवन तो बन गया लेकिन रूसा में ऐसा क्या था कि आज तक चर्चा हो रही है। इसकी जाँच के लिये भी बार-बार कहा जाता रहा है। बताया जाता है कि इसके बाद विधायक निधि से कालेज को फर्नीचर आया था जो सड़ गया। यह भी बताया जाता है कि विधायक स्व. कैलाश गहतोड़ी ने पहले नाराज होकर कालेज के फर्नीचर के लिये की घोषणा वापस ले ली लेकिन छात्र हित में फर्नीचर की घोषणा की परन्तु कालेज इस फर्नीचर की संभाल नहीं कर पाया। पूरा फर्नीचर खुली छत पर डलवा दिया गया जो बरसात भी झेलता रहा। इस प्रकरण को लेकर प्राचार्य नगेन्द्र द्विवेदी ने रोष प्रकट करते हुए सवाल उठाए थे।

बताया जाता है कि प्राचार्य जी. प्रकाश कालेज में रूसा के कार्यों को लेकर सोच में रहती थीं। उन्हें भय था कि करे कोई भरे कोई की स्थिति हो सकती है। कालेज में नैक के दौरान मिट्टी खुदान सहित कई ऐसे कार्य करवा दिये गये जिसमें फिजूल के साथ ही मौज मनाने वाले मनाते रहे। पूरे टनकपुर में खुसरफुसर होती रही कि आखिर कालेज को कौन चला रहा है या किसका भय है। मृदुभाषी व व्यवहार कुशल प्राचार्य जी.प्रकाश सुनती-सहती रही। कोरोना काल में प्राचार्य उनका निधन हो गया। लेकिन निधन से पूर्व वह सबकी सीआर बहुत करीने से लिख गईं। उनके निधन के पश्चात डीडीओ पॉवर बनबसा की प्राचार्य को दे दी गई। लेकिन कालेज में मुखिया की कुर्सी पर एक प्रवक्ता बैठने लगा। तर्क दिया गया कि वह प्रशासनिक कार्य देख रहे हैं। सबको आश्चर्य हुआ कि जब प्राचार्य का निधन हो चुका है और प्रभार बनबसा के प्राचार्य के पास है तो मुख्य कुर्सी पर कौन कैसे बैठ सकता है? इस घटना से सहज अनुमान लगाया जा सकता है कि कालेज किस दुर्दशा को प्राप्त होने जा रहा था।

अशान्त वातावरण में बाजपुर से डॉ. नगेन्द्र द्विवेदी इस कालेज के प्राचार्य बनकर आए और उन्होंने चुन-चुन कर खामियों में प्रहार शुरू किया लेकिन सच और गलत को ढांपे रखने वालों को बर्दाश्त कैसे होता? प्राचार्य द्वारा महाविद्यालय का फर्नीचर सड़ने से लेकर ईग्रन्थालय, रूसा तक के मामले उघाड़ने शुरू कर दिये। इस पर कालेज में मोर्चाबन्दी होने लगी।

कालेज में डॉ.द्विवेदी ने ईग्रन्थालय मामले पर सवाल उठाए। बताया जा रहा है कि इसमें रेटों का अन्तर है। बिल और सामग्री के रेटों का अन्तर है। ऐसे में सामग्री सील कर दी गई। अपने को उच्चशिक्षा का वरिष्ठतम प्रवक्ता और वैज्ञानिक कहने वाले एक व्यक्ति के साथ डॉ.द्विवेदी की कड़क बात होने लगी। पत्राचार निदेशालय और सीएम कार्यालय तक हुए। कालेज की जाँच के साथ ही फिर से बदनामी होने लगी। बहुत गहमागहमी के बाद प्राचार्य का रामगढ़ डिग्री कालेज स्थानान्तरण हो गया। टनकपुर कालेज की हरकतों से उच्च शिक्षा निदेशालय भी सोच में पड़ चुका था कि आखिर यह क्या हो रहा है। मुख्यमंत्री कार्यालय तक लगातार शिकायती पत्र और एक-दूसरे की पोल खोलने कागज सुलगाए जाने लगे। प्राचार्य का स्थानान्तरण होते ही पुन: बनबसा प्राचार्य को डीडीओ पॉवर दे दी गई लेकिन इस बार कालेज का प्रशासनिक कार्य डॉ.अब्दुल शाहिद देख रहे थे। डॉ. अब्दुल ने बहुत ही बेहतर तरीके से कालेज का संचालन किया लेकिन उन्हें भी कांटा मानते हुए असहयोग करने वाले सक्रिय रहे। सब लोग नये प्राचार्य की वाट जोहते रहे और कुछ अन्तराल में निदेशालय में अटैच डॉ. अनुपमा तिवारी को प्राचार्य बनाकर भेजा गया। जैसा की टनकपुर में होता रहा है प्राचार्य के आते ही उन्हें भी सपने दिखाए गये। लेकिन नज़र लग चुके कालेज की सिलवटें ठीक करना आसान नहीं है। इसके लिये बहुत साधक और साधना चाहिये। कालेज में स्टाफ भी बढ़ाना जरूरी है।

बताया जा रहा है कि प्राचार्य के आने के बाद फिर से घेराबाड़ी होने लगी और कई कर्मचारी अपने को उपेक्षित महसूस करने लगे। इस प्रकार से सौतेले व्यवहार का आरोप भी लगाया जाने लगा है। पिछले वर्ष छात्र संघ चुनाव में जिस प्रकार की धींगामुस्ती हुई उससे भी यह कालेज चारों ओर चर्चा में है। छात्र संघ चुनाव को लेकर जब छात्र हंगामा कर रहे थे प्राचार्य सड़क पर थीं और एक प्रवक्ता प्राचार्य की कुर्सी में बैठ गया, वह वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हुआ। फिर से सवाल उठा कि आखिर प्राचार्य की कुर्सी है या मजाक? छात्र-छात्राएं इस वीडियो को देखकर खुसरफुसर करने लगे। छात्र संघ अध्यक्ष का मामला आज भी कोर्ट में है जबकि नये सत्र के लिये प्रवेश प्रक्रिया होने जा रही है।

बहुत सीधा सा सवाल है कि 'प्रोफेसर' पद की गरिमा के अनुरूप कार्य होने जरूरी है। मोटा वेतन मिल जाना तो व्यक्तिगत आर्थिक माली हालत ठीक करना है लेकिन व्यवहार में समाज को क्या मिल रहा है, यह महत्वपूर्ण है। 'प्रोफेसर' पद की गरिमा को लेकर छात्र-छात्राएं चिल्लाते रहते हैं। टनकपुर डिग्री कालेज में बड़ा सवाल यह उठाया जाता रहा है कि प्रवक्ताओं का अतीत कैसा रहा है? आन्दोलन के समय मुंह सामने कहने के लिये टनकपुरवासी सजग रहे हैं लेकिन कालेज में लगा पलीता मिट नहीं पाया।

ओपन की परीक्षाओं के वित्तीय मसले की भी खूब चर्चा है। बताया जाता है कि उ.मु.विवि का केन्द्र यहाँ है लेकिन इसके लिये अधीर होते प्रवक्ता कैसा-कैसा कर चुके हैं। ड्यूटी के नाम पर मनमाफिक ड्यूटी लगा दी गई। यह भी बताया जा रहा है कि इस बार परीक्षा के बाद ड्यूटी का पैसा नहीं दिया गया क्योंकि पुराना समायोजन नहीं हुआ था। ओपन का चार्ज जिनके पास रहा उन्होंने कैसी सम्भाल की यह भी जाँच का विषय है।

टनकपुर डिग्री कालेज यह कथा बहुत लम्बी है, इसके अगले अंक में दिया जाएगा। फिलहाल यह सवाल पूरा उत्तराखण्ड पूछ रहा है कि उच्चशिक्षित वर्ग में क्या इस प्रकार के झगड़े होते हैं? क्या उच्चशिक्षित लोग ऐसी गजबज कर सकते हैं? क्या उच्चशिक्षा में प्रोफेसर हो जाने का मतलब जग जीतना है? यदि रूसा व अन्य में घपला नहीं है तो टनकपुर में इतना हंगामा क्यों? यदि किसी प्रवक्ता की सीआर रंगीपुती तो उसमें उत्तराखण्ड को गाली क्यों? क्या पर्वतीय राज्य इसलिये बना है कि गाली सुने? कुल मिलाकर बढ़ते हंगामे के बाद जाँच और किसी परिणाम को लेकर पूरा क्षेत्र इन्तजार कर रहा है।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

हिमालयी माँ नन्दादेवी मन्दिर पूजा-अनुष्ठान आयोजन की हार्दिक शुभकामनाओं के साथ-

पर्वतीय एजेंसी

मुखानी, कालाढूंगी रोड, हल्द्वानी

पेंट्स,
रंगाई-पुताई सामग्री,
नल-प्लम्बर,
निर्माण कार्य हेतु
सम्पर्क करें।
प्रो.संजय पन्त

श्रीमती चित्रा लस्पाल
हरीश सिंह लस्पाल
विकास नगर, भोटिया पड़ाव, हल्द्वानी

पृथ्वीपाल सिंह रावत
(एडवोकेट)
जी०एम०डी० स्कूल, ऊँचापुल
हल्द्वानी

न तेरा न मेरा Thats
APNA GHAR चौकोड़ी
HOTEL RESTRO BANQUET
मो.- 9458920379, 6396098804

YOGA MEDITATION | LIVE MUSIC | HOMELY FOOD | BIRTHDAY WEDDING

Near by-
(माँ कोटगाड़ी, नौलिंग देव, पातालभुवनेश्वर)
पितृछाया- स्वतंत्रता संग्राम सेनानी स्व. जोगासिंह मर्तोलिया

Hotel
Bala Paradise
Tiksain, Munsiari
Ph. 05961222237, 9412951678

घर से बाहर
घर का सा
होटल
लक्ष्य इन
मदकोट
सम्पर्क
7351285555

MARTOLIA
FURNITURE
A unit of Martolia Enterprises
Pilikothi, Haldwani
Mob- 8057167777, 7906752084, 8650427229

Hayat Paradise
Bus Station
Munsiari
Ph. 09411556700, 9997733070

धमोत होम स्टे
धरमघर/चकोड़ी
(एडवेंचर जोन, ट्रेकिंग,माउंटेन वाइकिंग, स्थानीय व्यंजन)
मो. 9760007148
www.mountainheights.in

माँ नन्दा आयरन एण्ड बिल्डिंग
मैटेरियल, भोटिया पड़ाव, हल्द्वानी
(सीमेन्ट, सरिया, टाइल, पेण्ट, सेनेटरी, हार्डवेयर)
गोदाम- जोहार एसोसिएट्स
बच्चीनगर- 1, कमलुवागांजा, हल्द्वानी
मो.- 7409440813, 7500619761

होटल माँ नन्दादेवी एण्ड बारातघर
नानासेम, मुनस्यारी
गणेश सिंह मर्तोलिया एण्ड सन्स
हार्डवेयर, बिल्डिंग मैटीरियल, जनरल आर्डर सप्लायर्स
फोन सम्पर्क- 05961-222236
8958525979, 9411134775

Enjoy Beauty of Himalaya at
MARTOLIA LODGE
Family Guest House- Sarmoly, Munsiyari
A Home Away From Home & Home Stay
Phone: (05961) 222287

पूर्ण कालिक
संगीत प्रशिक्षण
केन्द्र
हिमालय संगीत
शोध समिति
जे.के.पुरम्, सेक्टर डी
छोटी मुखानी
हल्द्वानी
सम्पर्क- 9411563413

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक श्रीमती गीता उप्रेती द्वारा पिघलता हिमालय, जे०के०पुरम्, सेक्टर डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी (नैनीताल) उत्तराखण्ड से प्रकाशित एवं शक्ति प्रेस, जे०के०पुरम्, सेक्टर डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी(नैनीताल) से मुद्रित।

सम्पादक: श्रीमती गीता उप्रेती फोन/फैक्स: (05946) 264013, 9458961490, 9411770280, 9411301014,
editorpighaltahimalay@gmail.com
Website- www.pighaltahimalay.com

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)